International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 05-08
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 17-04-2026
Accepted: 30-04-2026
Publish : 01-05-2026

निहारिका धाकड़
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,आगरा

शोध निर्देशिका
डॉ. अनीता
संस्कृत विभाग, कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा

Correspondence:
निहारिका धाकड़
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,आगरा

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में वर्णित नैतिक मूल्य

निहारिका धाकड़, डॉ. अनीता

नीति शब्द की व्युत्पत्ति **'नी'** धातु में **"क्तिन्"** प्रत्यय करके हुई है।[1] संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ में नीति के लिए **'भेंट, चढ़ावा, सम्बन्ध, दान तथा सहारा'** आदि पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया गया है।[2] सैंट्रल हिन्दी डिक्शनरी में नीति हेतु **"Policy, Guidance, Direction, Management, Conduct, Decorum, Plan, Scheme, Right Course of action, Political Science, Moral Philosophy, Worldly Wisdom, Practical Morality"** इत्यादि समानार्थक शब्दों का उपयोग हुआ है।[3] मानवीय अस्तित्व के समग्र उत्कर्ष में राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शारीरिक एवं आचार सम्बन्धी अभिवृद्धि एवं जीवन-मुक्तत्व की प्रबंधन-युक्ति ही नीति है। नीति तत्त्वों को नैतिक की संज्ञा दी गई है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के अनुव्रजन-काव्य-मालिका में यात्राएँ अनुभूति-परिस्फुटन तथा जीवन-समीकरणों में सृजनधर्मी उष्मा को उत्पन्न करती हैं। इनके पथशरण काव्य-रूपांकनों में नीतिगत विमर्श समाजनिष्ठ दायित्व-प्रज्ञा, मानवोचित संभाषणीय अन्तःक्रिया, सांस्कृतिक अंतर्लय एवं प्रकृति-निष्ठ भावों का समर्पण मूल्य संरूपित स्थिति में आकार लेता है। उन्होंने अपने गमन-वर्ण्यांशों में सामाजिक विसंगतियों, मनुष्यगत दयनीय अपूर्णताओं तथा नैतिक पतन की स्थितियों को प्रकट किया है।

मानव धन की लालसा में स्व-गुणों का परित्याग कर भौतिक सुख के पीछे भागे जा रहा है। उसको धन-पिपासा के मोह इतना अन्धा कर दिया है कि वह विनाश को ही जीवन की सर्वोच्च पूंजी समझता है। इसके विषय में वेदव्यास ने कहा है कि-

"संतोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
कुतः तत् धनलुब्धानां इतश्चेतश्च धावताम्।।"[4]

भारतभूमि ईश्वरीय संकल्प से पूर्ण होने के कारण अलौकिक शक्तियों से ओतप्रोत है। इसके समग्र रहस्यमय तत्त्वों को बोधिसत्त्व अनुभूति के सतत् संस्पर्श द्वारा ग्रहण किया जाता है-

"अहो दैवगतिश्चित्रा साक्षात्स्वर्गमयी धरा।
प्रत्यभिज्ञायते नैव प्रत्यभिज्ञाजनिः स्वयम्।।"[5]

त्रिलोक में पूजनीय पुण्यात्माओं द्वारा निर्मित होने के कारण स्तूप-भूमि देवलोक का द्वार प्रतीत होती है। यहाँ कि कौशिकी और नारायणी नदियाँ जल के प्रवाह द्वारा आर्य-भूमि को पोषित किया करती हैं-

"यत्र नारायणी पूता कौशिकी वाङ्गती शुभा।
वहन्त्यो भारतं क्षेत्रं प्रपुनन्ति जलोच्चयैः।।"[6]

भर्तृहरि का मानना है कि संस्कृत एवं मधुर वाणी ही मनुष्य का यथार्थ शील है। जबकि रत्नधातु भ्रामक प्रतिरूप है-

"वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।"[7]

जब रचनाकार के द्वारा समारोह के मध्य **"दिव्य नेपाल शीर्षक"** गीत को भावों से परिपूर्ण होकर गाया जाता है। तब रसों के प्रभाव से सम्पूर्ण रंगमंच जीवंत हो उठता है-

"तच्च श्रुत्वाऽखिलो रङ्ग आलिखितो ह्यलक्ष्यत।
सर्वतोऽपि यथाऽरण्ये सारङ्गः वल्लकीरवैः।।"[8]

असभ्य जन के द्वारा निरुपित कथनात्मक प्रहार से मानव निरंतर व्यथित रहता है। लोक में जो व्यक्ति सेवा भाव से प्रेरित रहता है। उसको हितकारी दृष्टि से कठोर वचन का प्रयोग नहीं करना चाहिए-

"न हीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।
दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक्।।"[9]

भारतभूमि पर सरस्वती एवं गंगा पवित्र नदियाँ निरन्तर प्रवाहित होती हैं। इनकी महिमा वेदों में बताते हुए कहा गया है कि-

"परितो निर्मलाश्च दिशोऽखिलाः।
निर्मलं पक्षिसङ्गीतं निर्मला सिन्धुरापगा।।"[10]

काव्य-विशारद आकाशयान से जन्मप्रदात्रि को हिम-आभा से परिवृत गिरिशिरोत्तम के विषय में बताते हैं कि माताश्री यह बदरी एवं केदार तीर्थ क्षेत्र है। उनकी धात्री श्रद्धा के साथ दोनों शिखरों को प्रणाम करती हैं-

"यद्वा तद्वा भवेत् क्षेत्रं किन्तु श्रद्धाभिभाविता।
दृष्टबदरीकेदारा प्रणनाम प्रसूर्मम।।"[11]

जो व्यक्ति धर्म के आवरण में अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु अनुष्ठान क्रिया करता है। उस मानव को किए गए कृत्य का फल प्राप्त नहीं होता है। गीता में ईश्वर एवं श्रद्धा रखने वाले जन को यथार्थ ज्ञान का अधिकारी बताते हुए कहा गया है-

"श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।"[12]

जगत् में हरप्रिया करुणामयी माता के स्वरूप में प्रतिष्ठित है। यह ही सम्पूर्ण सृष्टि को आहार उपलब्ध कराती हैं-

"देवी का न्वपरा लोके वत्सलाम्बा भवादृशी।
अन्नपूर्णा जगत्सर्वं यैका भोजयतेऽनिशम्।।"[13]

इनके पति महादेव महादैत्य एवं देवाधिदेव द्वारा निष्ठापूर्वक स्तुत्य हैं। जो भी जन इन्हें श्रद्धापूर्वक पूजते हैं। उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं-

"शम्भुरेकस्समच्योऽसौ यं सुरा असुरा अपि।
तुल्यमर्चन्ति सश्रद्धं निजाकाङ्क्षाप्रपूर्तये।।"[14]

भारतीय संस्कृति में प्रतिज्ञा पालन को प्रमुख उपांग माना गया है। इसमें वीरों के संकल्पों को प्रेरणास्पद तत्त्व के रूप में स्वीकार किया गया है। इन्हीं प्रतिज्ञाओं से संस्कृति एवं धर्म में निरन्तर वृद्धि हुई है। दोषयुक्त जन पशुपति के दर्शन करते ही मोह-बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। काव्यकार चित्त-धारा में विचार करते हैं कि जन्म देने वाली माता का स्थान तो सर्वोच्च माना गया है। तभी वह पालनहारि को देवाधिदेव के दर्शन कराने का प्रण करते हैं। तत्पश्चात् वह दिल्ली की ओर प्रस्थान कर वायुयान के माध्यम से अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं-

"विनिश्चित्येति चित्ते स्वे साम्बो दिल्लीमुपागतः।
भारतवायुयानेन यात्राऽरब्धा मया खलु।।"[15]

जीवन में उच्च आदर्श की प्राप्ति के लिए सांसारिक कामासक्ति का बलिदान देना ही त्याग कहलाता है। कश्मीर में उपस्थित हिंदू धर्मावलंबी कुरान के धर्म-सिद्धांतों द्वारा संयमित हैं। वह पूर्वकालीन धार्मिक आख्यानों का परित्याग कर परमत की आचार-पद्धति का अनुसरण करने लगे हैं-

"विस्मृतातीतवृत्तान्ता परधर्मसमाश्रिताः।
काश्मीराभिजना नित्यं तन्वते नग्नताण्डवम्।।"[16]

पद्यदर्शी जैसे ही विमान से उतरते हैं। वहाँ उनका स्वागत करने के लिए मित्रों का समूह उपस्थित रहता है तथा गन्तव्य मार्ग बताने के लिए बाबूराम पोखरेल वहाँ पहले से ही विद्यमान रहते हैं-

"को नु कुत्र प्रापणीयो निश्चिक्युरिति साग्रहम्।
बाबूरामपोखरेल आगतो द्राङ् मदन्तिकम्।।"[17]

शिव के दर्शन करने के पश्चात् कठिन परिश्रम करके जब उनकी माँ थक जाती है। तब काव्यकार अपनी माता को कक्ष में चाय पिलाकर नवीन ऊर्जा के माध्यम से थकान को दूर करते हैं-

"ततश्चागत्य कक्षं स्वं चायपेयेन मातरम्।
नूतनोत्साहसम्पन्नां कृतवान् विगतक्लमाम्।।"[18]

लेह-उपजीवी जन की मनःसंरचना पूर्णतः निर्मल एवं निसंकीर्ण है। उनके स्वाभाविक मुखमंडल पर नित्य ही सुकोमल हास्य-रेखा विद्यमान रहा करती है-

"लद्दाखवासिनस्सर्वे नित्यस्मेरानना ध्रुवम्।
प्रकृत्यैव समीक्ष्यन्ते सरलाः सार्जवास्तथा।।"[19]

सत्यदेव अनवरत रूप से कल्याण कार्यों में संलग्न रहते थे। उनका मन राग–द्वेष से रहित था। उनके सद्विचारों से समृद्ध वागीश्वरी भोर की रश्मियों की भांति समस्त विश्व में प्रसारित हो गई थीं-

"अधीतिबोधाचरणप्रचारपरिवृंहिता।
प्रभातश्रीरिव लोके व्याप्तासीद्यत्सरस्वती।।"[20]

ग्राममठ में शनि महादेवालय के वैभव के कारण अज्ञात हाथों का प्रवेश निष्फल होता है। यहाँ निर्बन्धित कक्षप्रवेश के होने पर भी विलक्षण कोष्ठको के मध्य रत्नभण्डार अभिगमन-रहित रहते हैं। इनकी क्रोधस्फुरित आपदा से प्रयासरत चोरों की लालसा व्यर्थ प्रतीत होती है-

"न लुण्ठकास्तत्र सुखं भजन्ते
शनिप्रकोपाद्धरणप्रयासाः।
तथाऽचरन्तो न च तेऽग्रहाराद्
गन्तुं बहिर्निष्टधियः क्षमन्ते।।"[21]

प्रजा राजा भोज के प्रति समर्पणभाव रखा करती थी। शासक भी प्रजा हेतु सदैव समर्पित रहा करता था। उनके शासनकाल में सैनिक राजा द्वारा प्राप्त वेतन से सन्तुष्ट होने के कारण वह रणभूमि में उत्साहपूर्वक प्रदर्शन करते थे-

"स्वाध्यायैर्नित्यवृद्धैश्चतुरधिकदशोदात्तविद्याः प्रदानै-
र्दानं लोकोपकारैर्निरतिशयनता सुप्रजा राजभक्ता।
दाक्षिण्येनैव भृत्या रणशिरसि गताः सैनिका वेतनाद्यै-

रातोषंभोजितास्ते नृपतिसदभिधां सार्थिकां साधु चक्रुः।।"[22]

साहित्य-पुरोधा सूर्यतनय से कृपापूर्ण दृष्टि की याचना करते है। जिनके दावानल सदृश क्रोधाग्नि को नश्वर देहधारी वहन करने में असमर्थ हैं। इनकी अचल शिलावत तीक्ष्ण दृष्टि के प्रहार से स्वयंपूर्ण दिव्य सत्ता भी निर्गत रहा करती है-

"कथं भवत्क्रोधकृशानुदीप्यच्छि-
खावलीभूरिपरीतकायः।
क्षमः क्षणं जीवितुमस्मि तस्माच्छने!
कृपालो! कृपणे दयस्व।।"[23]

छायासुत की विक्षेपित मनोवृत्ति होने पर जीव अभिमान से अभिसिंचित रहते हैं। उनकी अंतिम परिणति शून्याभास में परिवर्तित हो जाती हैं। उनकी अंतःस्थिति मरु-समीर में उड़ते शुष्क पत्तों की तरह निस्पंद रहती है। स्वच्छन्द-निवारित अस्तित्व से सम्पन्न काव्य-विद् की संचित फल-नियति कर्मगत द्वंदों से रंजित है। वह उन्हें उसी प्रकार स्वप्रभुत्व में समाहित कर लेती है, जिस तरह समीर के अनियंत्रित प्रवाह में कोमल पत्ते छिटक कर अराजकता में विलीन हो जाते हैं-

"अनन्तजन्मार्जितकर्मबन्धा
निम्नोन्नताः कल्मषपुण्यसंघाः।
प्रभावयन्त्येव हि मां प्रसह्य
वात्या इवाऽवृन्तमसारपत्रम्।।"[24]

बंगाल दुर्बल प्रशासन के कारण गोरखाओं के अत्याचार से अत्याधिक पीड़ित हुआ था। उसमें स्वयं की विचार क्षमता न होने के कारण आक्रमणकारियों की दासता से मुक्त होने में वह असर्मथ रहा था-

"यत्कार्यं तत्र नो शक्तिर्यच्चिन्त्यं तत्र नो मतिः।
यद्ध्येयं तत्र नो निष्ठा यत्प्राप्यं तत्र नो गतिः।।"[25]

काव्यसर्जक समाजघाती व्यक्ति के विनाश के विषय में बताते हुए कहते हैं-

"समाजाभिमतं पूतं यो जनः समुपेक्षते।
विनाशस्तस्य दुर्वारो विधात्राऽपि न वार्यते।।"[26]

सृष्टि में काव्य की आत्मा ध्वनिरूप में विद्यमान रहती है। इसी में निबद्ध राजा के उपदेशों को आचार्यगण निःसंदेह रूप से ग्रहण किया करते है-

"काव्यस्यात्मा ध्वनिर्नो जगदुरिति बुधाः केऽप्यलङ्कारदक्षाः
केचिद् वैदर्भमार्गानुसरणपटवो गौडमार्गं निनिन्दुः।
सन्ध्योक्तिं वा परोक्तिं नृपतिविरचितां निर्विशङ्कं व्यरौत्सुः
आचार्याः केऽपि सिद्धा ध्वनिरसपदवीसूक्ष्मतत्त्वप्रवेकाः।।"[27]

निष्कर्ष- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में नैतिक मूल्य भारतीय आध्यात्मिक दर्शन में निहित भाव– उद्वेग एवं सामाजिक दायित्व बोध के स्वरूप में प्रकट हुए है। इनकी सृजन लेखनी में कर्तव्यनिष्ठ शुचिता प्रकृति-उपासना, मानवीय सौहार्द, सांस्कृतिक गौरव-बोध, सहानुभूति, धर्मनिष्ठा, श्रम-सत्कार एवं के रूप में मुखरित हुई है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. अष्टाध्यायी : पाणिनि, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, सूत्र-3/3/94
2. संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ : द्वारका प्रसाद शर्मा, चतुर्वेदी, रामनारायण लाल वेनी प्रसाद, इलाहाबाद, सं. 1962, पृ.-628
3. शान्तिपर्व में नैतिक मूल्य, हरिवंश अनेजा, कादम्बरी प्रकाशन ए-55/1, सुदर्शन पार्क, नयी दिल्ली-110015, पेज न.-33
4. महाभारत : भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य, जगतनारायण दुबे, संजय प्रकाशन ए-2/703, प्रगति विहार, सोम बाजार दिल्ली-53, प्रथम संस्करण : 1999, पेज न.-1
5. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022 , रुद्राक्षशतकम् श्लोक सं.-35
6. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-140
7. नीतिशतकम्, डॉ. केवल कृष्ण आनन्द, संजय पब्लिकेशन्स आनन्द कॉम्प्लैक्स, किदवई पार्क, राजामण्डी, आगरा-282002, द्वितीय संस्करण : 2014, श्लोक-19
8. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-121
9. महाभारत : भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य, जगतनारायण दुबे, संजय प्रकाशन ए-2/703, प्रगति विहार, सोम बाजार दिल्ली-53, प्रथम संस्करण : 1999, पेज न.-129
10. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, रुद्राक्षशतकम्, श्लोक सं.-6
11. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-46
12. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप, कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद संस्थापकाचार्य : अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ, भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट हरे कृष्ण धाम जुहू, मुंबई 400049, परिवर्धित द्वितीय हिन्दी संस्करण, श्लोक4/39
13. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, वरदेश्वरशतकम्, श्लोक सं.-54
14. शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, वरदेश्वरशतकम्, श्लोक सं.-55

15.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-7

16.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, रुद्राक्षशतकम्, श्लोक सं.-38

17.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-56

18.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, निमिपालशतकम्, श्लोक सं.-108

19.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, रुद्राक्षशतकम्, श्लोक सं.-96

20.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, वरदेश्वरशतकम्, श्लोक सं.-7

21.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, शनिशतकम्, श्लोक सं.-44

22.अभिराजसहस्रकम्, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रकाशनवर्षम् : मार्च 2000 ई., धारामाण्डवीयम्१, श्लोक सं.-17

23.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, शनिशतकम्, श्लोक सं.-6

24.शतकपञ्चदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय: संसदः अधिनियमेन एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058, प्रथमं संस्करणम् : 2022, शनिशतकम्, श्लोक सं.-11

25.पञ्चकुल्या, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : जनवरी 1993, देववाणीहुङ्कारशतकम्, श्लोक सं.-12

26.पञ्चकुल्या, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : जनवरी 1993, देववाणीहुङ्कारशतकम्, श्लोक सं.-4

27.अभिराजसहस्रकम्, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रकाशनवर्षम् : मार्च 2000 ई., धारामाण्डवीयम्१, श्लोक सं.-58